रविवासरीय
हिन्दुस्तान
तरक्की को चाहिए नया नजरिया
रविवार, 15 अप्रैल 2018, बरेली, पांच प्रदेश, 20 संस्करण,
www.livehindustan.com

PAGE NO. 09 TOP

## पद्मश्री प्रो. सरोज ने कहा बच्चों के बीमारी होने का सबसे बड़ा कारण लड़कियों में पोषक तत्वों की कमी

# शादी तय होते ही खाने लगें फॉलिक एसिड पिल्स

**बरेली | प्रमुख संवाददाता**

स्वस्थ बच्चा चाहिए तो गर्भधारण से तीन महीना पहले ही महिलाओं को फॉलिक एसिड की गोलियां लेना शुरू कर देना होगा। गर्भावस्था के बाद फॉलिक एसिड की गोलियां खाने का कोई विशेष फायदा नहीं होता। ऐसे में सगाई होते ही लड़कियों को फॉलिक एसिड की गोलियां खिलानी शुरू कर देनी चाहिएं।

एसआरएमएस के दीक्षांत समारोह में पहुंचीं बीएचयू आईएमएस की बाल रोग विशेषज्ञ पद्मश्री प्रो. सरोज चूड़ामणि गोपाल ने कहा कई बीमारियों पैदायशी होती है और मां का खानपान इसकी एक बड़ी वजह है। आम भारतीय परिवारों में अभी भी लड़कियों को लड़कों की तुलना में कम महत्व दिया जाता है। यह पढ़ाई और खानपान दोनों के लिए है। लड़कियां जब ससुराल पहुंचती हैं तो उनमें एक बड़ी समस्या कुपोषण की होती है। ऐसे में गर्भधारण के बाद पैदा होने वाले बच्चे कई बीमारियों की जद में होते हैं। प्रो. चूड़ामणि ने कहा कि अक्सर चिकित्सक गर्भधारण के बाद फॉलिक एसिड की गोलियां देना शुरू करते हैं, मगर इसका खास फायदा नहीं होता।

फॉलिक एसिड भ्रूण के विकास के लिए बहुत जरूरी है और यह तभी संभव है जब गर्भधारण के समय शरीर में हीमोग्लोबिन भरपूर हो। भ्रूण बनना शुरू होने पर गोलियां खिलाने का फायदा न के बराबर होगा। ऐसे में शादी तय होते ही लड़कियों को ये गोलियां देनी शुरू करनी चाहिएं ताकि उनका बच्चा पैदायशी बीमारियों से बचा रह सके।

पद्मश्री प्रो. सरोज चूड़ामणि गोपाल।

- बच्चों में होने वाली बीमारियों के लिए मां का खानपान बड़ी वजह
- भ्रूण के विकास के लिए बहुत जरूरी होता है फॉलिक एसिड

### सरकारी मेडिकल कॉलेज की जरूरत

प्रो. चूड़ामणि ने कहा कि सरकारी मेडिकल कॉलेज खोलने की जरूरत है। प्राइवेट मेडिकल कॉलेज में फीस काफी अधिक होती है, जो एक सामान्य परिवार का बच्चा नहीं भर सकता। सरकार को संसाधन बढ़ाने के साथ नए सरकारी कॉलेज खोलने होंगे तभी चिकित्सा के क्षेत्र में हम आगे जा सकेंगे।

### एलोपैथ बेस्ट, आयुर्वेद नहीं, यह धारणा गलत

आज भी लोगों में गलत धारणा है कि एलोपैथी अच्छी है और आयुर्वेद, होम्योपैथी, यूनानी, सिद्धा, न्यूरोपैथी, योग दोयम हैं। यह गलत है। इन क्षेत्रों के विशेषज्ञों को बेहतर एक्सपोजर मिले तो वह प्राइमरी हेल्थ सेक्टर में बड़ा योगदान दे सकते हैं। प्रो. चूड़ामणि ने कहा, लोगों में धारणा है कि एलोपैथ से डिग्री लेने वाला ही डॉक्टर है। आंकड़ेबाजी भी एलोपैथ के डॉक्टरों की संख्या के आधार पर बनती है। सरकारी मशीनरी आयुर्वेद, होम्योपैथी, यूनानी के प्रोफेशनल को नहीं मिलती।